

ऋग्वेद मन्त्र १.१.९

अग्निदेव से कल्याण की प्रार्थना

Presented by: Acharya Kapil | Contact: 8756390767

यह ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त (अग्नि सूक्त) का अन्तिम मन्त्र है। यह मन्त्र ईश्वर (या अग्नि) और मनुष्य के बीच एक अत्यन्त आत्मीय, पिता-पुत्र के सम्बन्ध को स्थापित करता है।

**स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव ।
सचस्वा नः स्वस्तये ॥९**

पदपाठः सः । नः । पिताऽइव । सूनवे । अग्ने । सुऽउपायनः । भव । सचस्व । नः । स्वस्तये ॥

शब्दार्थ (Word Meaning)

सः (स):	वह (जगदीश्वर / अग्निदेव)
नः:	हमारे लिए
पितेव (पिता इव):	पिता के समान
सूनवे:	पुत्र के लिए (स्वसन्तान के लिए)
अग्ने:	हे अग्निदेव! / हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर!
सूपायनः:	आसानी से प्राप्त होने वाले (सुप्राप) / सुगमता से सुख-साधन देने वाले
भवः	हो जाइये
सचस्व (सचस्वा):	हमारे साथ रहें / हमें समवेत करें
स्वस्तये:	कल्याण के लिए / विनाशरहित अवस्था (सुख) के लिए

आचार्यों के अनुसार भाष्य (Classical Commentaries)

१. सायणाचार्य भाष्य:

हे अग्निदेव! जिस प्रकार एक पिता अपने पुत्र के लिए सरलता से प्राप्त होने योग्य (सुप्राप) होता है, उसी प्रकार आप हमारे लिए सुगमता से प्राप्त होने वाले (सूपायन) बनें। आप हमारे कल्याण और विनाश से रक्षा (स्वस्तये) के लिए सदैव हमारे साथ रहें (समवेतो भव)।

२. स्वामी दयानन्द सरस्वती भाष्य:

हे ज्ञानस्वरूप जगदीश्वर (अग्ने)! जैसे पिता अपनी सन्तान (पुत्र) के लिए सुगमता से प्राप्त होने वाला और सुख के साधन प्रदान करने वाला होता है, वैसे ही आप हमारे लिए ज्ञान और सुख के उत्तम साधन प्राप्त कराने वाले हों। आप हमें परम सुख और कल्याण के लिए अपने साथ समवेत करें (जोड़ें)।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

भौतिक विज्ञान और उष्मागतिकी (Thermodynamics) के सन्दर्भ में "अग्नि" ब्रह्मांडीय ऊर्जा (Cosmic Energy), ऊष्मा (Heat) और प्लाज्मा का प्रतीक है।

- **ऊर्जा का पितृ-स्वरूप (पिता इव सूनवे):** जिस प्रकार एक पिता अपने पुत्र का भरण-पोषण और संरक्षण करता है, उसी प्रकार सूर्य की ऊष्मा और पृथ्वी पर उपस्थित ऊर्जा जीवन का मूल आधार है। ऊर्जा के बिना किसी भी जैविक या रासायनिक प्रक्रिया (Metabolism, Photosynthesis) की कल्पना असंभव है।
- **सुलभ ऊर्जा (सूपायन):** प्रकृति में ऊर्जा अनन्त है, लेकिन मानव जीवन के विकास के लिए उसका Accessible (सुलभ) और Usable (उपयोगी) रूप में होना आवश्यक है। जब ऊर्जा सुगमता से नियंत्रित रूप में प्राप्त होती है, तभी वह सभ्यता का निर्माण करती है।
- **तापीय सन्तुलन और कल्याण (स्वस्तये सचस्व):** यहाँ 'स्वस्ति' (कल्याण/अविनाश) का अर्थ है पूर्ण सन्तुलन (Equilibrium)। ऊर्जा सदैव हमारे साथ एक सन्तुलित अवस्था में रहे, जिससे हमारे शरीर का तापमान (Homeostasis) और प्रकृति का चक्र (Ecological Balance) बना रहे, और यह विनाश (Entropy/Disorder) का कारण न बने।

व्याकरण एवं स्वर प्रक्रिया (Grammatical Derivation)

पाणिनीय अष्टाध्यायी के अनुसार इस मन्त्र की व्याकरणिक और स्वर प्रक्रिया इस प्रकार है:

- **नः**: 'अस्मद्' शब्द का रूप है। महर्षि पाणिनि के सूत्र 'अनुदात्तं सर्वम्' (पा. सू. ८.१.१८) के अनुसार यहाँ सम्पूर्ण पद अनुदात्त है।
- **इव**: फिट् सूत्र 'चादयोऽनुदात्ताः' (फि. सू. ८४) के नियम से 'इव' अव्यय अनुदात्त है।
- **पितेव**: यहाँ वार्तिक 'इवेन नित्यसमासः पूर्वपदकृतिस्वरत्वं च वक्तव्यम्' (पा. सू. २.१.४.२) के अनुसार 'इव' के साथ नित्य समास हुआ है, जिससे यह समस्त पद (पितेव) मध्योदात्त हो गया है।
- **सूपायनः**: 'शोभनम् उपायनं यस्य' (जिसकी प्राप्ति बहुत सुन्दर या सुगम हो) - यहाँ बहुव्रीहि समास है। 'नञ्सुभ्याम्' (पा. सू. ६.२.१७२) सूत्र से इस पद में अन्तोदात्त स्वर हुआ है।
- **सचस्व / सचस्वा**: यहाँ 'सचस्व' पद के पूर्व में अन्य पद होने पर भी 'पदात्परत्व' (पद के बाद होने का नियम) लागू नहीं होता, अतः 'निघात' (सर्वानुदात्त) नहीं हुआ है। लसार्वधातुक के अनुदात्त होने पर केवल धातु का स्वर ही शेष रहता है। स्वामी दयानन्द के अनुसार, वैदिक छन्द में 'अन्येषामपि दृश्यते' (अष्टा. ६.३.१३७) सूत्र से 'सचस्व' को दीर्घ होकर 'सचस्वा' रूप सिद्ध होता है।

मन्त्र का उपयोग (Viniyoga by Sayana)

सायणाचार्य की पद्धति के अनुसार, इस सूक्त का सामान्य विनियोग अग्नि-उपस्थान (अग्नि की स्तुति एवं सान्निध्य प्राप्ति) तथा प्रातरनुवाक में होता है। विशेष रूप से यह सूक्त का अन्तिम (नौवाँ) मन्त्र है, जिसका उपयोग यज्ञानुष्ठान की पूर्णता पर 'स्वस्ति-वाचन' और अग्निदेव (परमेश्वर) से ऐहिक तथा पारलौकिक सुरक्षा की याचना के लिए किया जाता है। यह मन्त्र कर्मकाण्ड में यजमान और उपास्य देव के मध्य भय-रहित, वात्सल्यपूर्ण सम्बन्ध की स्थापना करता है।